

धर्म निरपेक्ष और आधुनिक भारत की रोज



गांधी: एक पुनर्विचार

सुकुमार मुरलीधरन | इरफ़ान हबीब | विपिन चन्द्रा
रविन्द्र कुमार | कुमकुम संगारी

गांधी: एक पुनर्विचार

धर्म निरपेक्ष और आधुनिक भारत की खोज



सुकुमार मुरलीधरन । इरफान हबीब । बिपिन चन्द्रा । रविन्द्र कुमार । कुमकुम संगारी

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: सितंबर, 2025

© SAHMAT

अनुक्रम

राष्ट्र शासन, धर्म और सिविल समाज: गांधी और राजनीति की आधुनिकता	3
सुकुमार मुरलीधरन	
गांधी जी	37
इरफान हबीब	
गांधी जी, धर्म निरपेक्षता और सांप्रदायिकता	68
बिपिन चन्द्रा	
गांधी और बुर्जुवा आधुनिकता में भारत का संक्रमण	120
रविन्द्र कुमार	
पुनरुद्धार का आख्यान: गांधी के अंतिम वर्ष और नेहरूवादी धर्म निरपेक्षता	131
कुमकुम संगारी	

राष्ट्र शासन, धर्म और सिविल समाज: गांधी और राजनीति की आधुनिकता

सुकुमार मुरलीधरन

दिल्ली में कार्यरत वरिष्ठ पत्रकार

“मातृ देश” में निष्पक्ष, राजनीतिक अभियान के बाद गांधी 1909 के आखिर में इंग्लैंड से दक्षिण अफ्रीका के लिए रवाना हो गए। उनके साथ एक छोटा सा मुस्लिम कारोबारी था। जो दक्षिण अफ्रीका में प्रवासी भारतीय समुदाय की भलाई के लिए चलाए जा रहे अभियान का हिस्सा था। अन्य कोई आकर्षण न होने के कारण गांधी ने भारत की ओर ध्यान दिया। पिछले दो दशकों में वह यहाँ बीच-बीच में थोड़ी-थोड़ी अवधि के लिए आए थे।

इस यात्रा के दौरान बड़ी तेज़ी से लिखते हुए उन्होंने हिंद स्वराज को पूरा किया जिसमें उन्होंने भारतीय राष्ट्रवाद के साथ अपने राजनीतिक संबंध की शर्तें स्पष्ट की। हिंद स्वराज एक अज्ञात वार्ताकार के साथ उनके संवाद के रूप में है। इस पुस्तक पर वह अपने जीवन के अंतिम दिनों तक जोर देते रहे इसमें उनके राजनीतिक दर्शन का स्पष्ट निचोड़ है। गांधी की एक प्रारंभिक आत्मकथा के अनुसार यह वार्ताकार उस समय लंदन में रहने वाले राजनीति आंदोलनकारी विनायक दामोदार सावरकर थे जिन पर कुछ समय बाद ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ राजद्रोह के लिए मुकदमा चलाया गया और उम्र कैद की सजा देकर अंडमान भेज दिया गया। कुछ सप्ताह पहले ही गांधी और सावरकर दशहरे के अवसर पर लंदन में भारतीय समुदाय की सभा में एक मंच पर आए थे। माननीय अतिथि के रूप में

अपनी टिप्पणियों में गांधी ने राम की उदारता और स्नेहसिक्त दयालुता का महिमामंडन बना। हिन्दू समुदाय का यह पात्र उनके लिए आखिरी दम तक घनिष्ठ साथी और प्रेरणास्रोत बना रहा। दशहरा आयोजन को राजनीतिक मंच में नहीं बदला जाएगा स्वयं द्वारा तय किए गए इस नियम की अवहेलना करते हुए तनिक सूक्ष्मता के साथ उन्होंने कहा कि राष्ट्र के रूप में भारत को बुराई पर विजय का अभियान अभी चलाना है। उन्होंने घोषणा की कि यदि भारत में सभी धर्मों और जातियों के लोग राम के झंडे के नीचे एक हो जाए तो उस भूमि से बुराई हमेशा के लिए खत्म हो जाएगी।

इसके थोड़ी देर बाद बोलते हुए सावरकर ने भारत की सांस्कृतिक समृद्धि की बात की जिसकी शोभा उसकी बहुरंगी विविधता से और भी बढ़ जाती है। उन्होंने कहा, "हिन्दू हिंदुस्तान के हृदय है। लेकिन जिस तरह से विभिन्न रंगों से इंद्रधनुष की शोभा घटती नहीं बल्कि बढ़ती है इसी प्रकार मुस्लिम, पारसी, यहूदी और अन्य सभ्यताओं के श्रेष्ठ तत्वों को रचा - पचाकर हिंदुस्तान भविष्य के आकाश पर और भी सुंदर दिखेगा।"² राम के विषय में गांधी ने जो कुछ कहा उसे उन्होंने दोहराया और दशहरे से पहले नौ दिनों के आयोजन तथा क्रोध और प्रतिशोध की प्रतिमा दुर्गा के पंथ की बात विशेष रूप से की।

यह पहली सारगर्भित महत्वपूर्ण भेंट थी जिसमें बाद में चलकर भारतीय राष्ट्रवादी राजनीति में बहुत गंभीर धाराओं का रूप लिया। कुछ मामलों में पट्टाक्षेप चार दशक बाद हुआ जब सावरकर पर गांधी की हत्या के लिए मुकदमा चलाया गया तथा कानून प्रक्रिया में कमियों और उनकी अपनी चतुरतापूर्ण तथा टालम टोल वाली गवाही के कारण उन्हें बरी

कर दिया गया।³ लेकिन भारत की राष्ट्रीय पहचान को धर्म निरपेक्ष आदर्श से जोड़ने की दृष्टि से पट्टाक्षेप होना अभी शेष है यह बात सावरकर के मरणोपरांत उनके कल्पित अपमान पर हाल ही में हुए उन्माद से स्पष्ट हो जाती है।⁴

हिन्द स्वराज लिखने के बाद के वर्षों में गांधी ने कई बार इस पैम्फलेट के विषयों को छेड़ा लेकिन अपने वार्ताकार की पहचान के बारे में कोई संकेत नहीं दिया। पैम्पलेट के 1921 के संस्करण की भूमिका में उन्होंने लिखा कि यह "लंदन में विख्यात अराजकतावादी" से संपर्क के बाद "हिंसा की भारतीय विचारधारा के जवाब" में लिखा गया। इस अवसर पर उन्होंने इसमें निहित सिद्धांतों में अपनी स्पष्ट आस्था की बात भी की "मेरा विश्वास पहले से भी गहरा हो गया है। मेरा मानना है कि यदि भारत आधुनिक सभ्यता को नकार दे तो इससे उसका भला ही होगा"। जोरदार स्वागत के साथ भारत लौटने के तीन वर्ष बाद गांधी भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के अगुवा बना दिए गए। आंदोलन के भविष्य के बारे में उन्होंने बड़ी सरल सी बात कही। उन्होंने लिखा कि हिन्द स्वराज की उपेक्षा हो रही है क्योंकि "कार्यक्रम के केवल एक अंश को उसकी संपूर्णता में कार्यान्वित किया जा रहा है। लेकिन साथ ही खेद के साथ उन्हें यह स्वीकार करना पड़ा कि "इसका पालन भी पुस्तक की भावना के अनुरूप नहीं किया जा रहा है। यदि वास्तव में ऐसा हो जाए तो भारत में एक दिन में स्वराज स्थापित हो जाएगा।"⁵

हिन्द स्वराज लिखते समय 1909 में अपना आकार ग्रहण करने के लिए संघर्षरत भारत राष्ट्र गांधी के विज्ञान का विशिष्ट हिस्सा था। रवींद्रनाथ ठाकुर, जिनसे वह अभी तक

व्यक्तिगत रूप से नहीं मिले थे, के विपरीत गांधी के मन में राजनीतिक कार्यवाही के लिए राष्ट्रवाद को संगठन सिद्धांत के रूप में अपनाने में कोई दुविधा नहीं थी। ठाकुर के विपरीत ही गांधी उस समय की भारतीय राष्ट्रवादी परियोजना के मुख्य वाहक के रूप में कांग्रेस को पर्याप्त श्रेय देते थे। गांधी ने कहा कि अपनी विफलताओं के बावजूद कांग्रेस ने पूरे भारत को राष्ट्रवाद की भावना से ओत-प्रोत कर दिया है। उन्होंने कहा कि बंगाल प्रांत को विभाजित करने की साम्राज्यवादी रणनीति के प्रत्युत्तर में “बंगाल में जो भावना पैदा हुई है। वह उत्तर में पंजाब तथा दक्षिण में कैप कोमारिन तक फैल गई है।”⁶

ब्रिटिश उपनिवेशवाद के खिलाफ लोगों को गोलबन्द करने के लिए एक स्लोगन और अवधारणा के रूप में राष्ट्रवाद की ताकत को गांधी ने बहुत तेजी से पहचान लिया लेकिन एक संगठित राजतंत्र की नैतिक वैधता के बारे में उनकी शंका बनी रही। यह शब्द काफी देर तक गांधी की राजनीतिक शब्दावली में नहीं आया लेकिन आधुनिक राजनीति विज्ञान की शब्दावली में जिसे शासन कहा जाता है उसका हिन्द स्वराज में कोई उपयोग नहीं है। वास्तव में गांधी के विचार से आधुनिक शासन ईश्वर का स्थान लेने की मनुष्य की उदंडता है।

मानव जाति का यह प्रतीयमान दंभ हिन्द स्वराज के विचारधारात्मक विरोधी ने बखूबी अभिव्यक्त किया है। “हमारी अपनी नौ सेना, अपनी थल सेना होनी चाहिए और हमारी अपनी भव्यता होनी चाहिए। केवल तभी दुनिया में भारत की आवाज गूँजेगी। यह बात “पाठक ने कही तथा गांधी के बहुत गहरे विश्वासों को चुनौती दी। गांधी ने अपनी बात